हिन्दी साहित्य (देवनागरी लिपि में) (कोड-11)

समय : 3 घंटे | अधिकतम अंकः 150

नोट : कुल पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। खण्ड एक व खण्ड दो मे से किन्हीं दो-दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। अंतिम खण्ड तीन अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के अंक सामने दिये हुये है।

खण्डः एक

1. भारत की बहुभाषिकता और संपर्क भाषा की आवश्यकता के रूप में हिन्दी भाषा की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (30)
2. देवनगरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिए। (30)
3. बोली के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुये बोली और भाषा का पार्थक्य निरूपित कीजिये। (30)
4. रीतिकाव्य की पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुये इस काल के उन्नयन में विभिन्न कारकों का उल्लेख कीजिये। (30)
5. 'कामायनी का प्रतिपाद्य' समरसता का जीवन-दर्शन है। समकालीन जीवन में इसकी प्रासंगिता को ध्यान में रखते हुये इस कथन के औचित्य पर प्रकाश डालिये। (30)

खण्डः दो

6. अष्टछाप के कवियों का नामोल्लेख करते हुये कृष्ण भक्ति के विकास में सूरदास के योगदान पर प्रकाश डालिये। (30)
7. 'तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर निराला के काव्य में उनकी प्रगतिशील चेतना की अभिव्यक्ति पर विचार कीजिये। (30)
8. समकालीन कविता में व्यंग्य-कला का विवेचन कीजिए। (30)
9. 'पृथ्वीराज रासो' में तथ्य और कल्पना का संयोग है। इस कथन की समीक्षा कीजिए। (30)
10. निबन्धकार एवं नाट्ककार के रूप में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द के योगदान को प्रमाणित कीजिए। (30)

खण्डः तीन

11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिये - (10X2=20)

    (क) बिहारी की बहुज्ञता

    (ख) मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम अभिव्यंजना

    (ग) विद्यापति की भाषा

    (घ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबंधशैली

    (ड) हिन्दी गद्य का विकास

12. निम्नलिखित के कथन और शिल्प का विवेचन कीजिये - (10)

    "सामीप्य से अभिप्राय केवल किसी के साथ-साथ लगा रहना नहीं है। श्रवण, कीर्तन और स्मरण आदि भी सामीप्य ही के विधान हैं। बाह्य और अभ्यतंर दोनों प्रयत्नों से सामीप्य की सिद्धि होती है।"

    अथवा

    "इच्छानर की और, और फल
    देती उसे नियति है,
    फलता विष पीयूष-वृक्ष में
    अकथ प्रकृति की गति है।"

--X--